



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Guru Pradosh Vrat Katha | गुरु प्रदोष व्रत कथा | PDF

प्रदोष व्रत हर महीने में 2 बार पड़ता है। शुक्ल और कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को यह व्रत किया जाता है। जब यह व्रत गुरुवार को पड़ता है तो इसे गुरु प्रदोष व्रत कहते हैं। प्रदोष व्रत की पूजा के बाद उसकी कथा को पढ़ना सबसे जरूरी होता है।

गुरु प्रदोष व्रत बहुत ही मंगलकारी और शुभफलदायी माना जाता है। इस प्रदोष व्रत को करने से भगवान शिव के साथ ही भगवान विष्णु की कृपा का भी लाभ मिलता है। माना जाता है कि गुरु प्रदोष का व्रत करने वाले को 100 गाय को दान करने के समान फल की प्राप्ति होती है। शास्त्रों में बताए गए नियमों के अनुसार कोई भी व्रत तब भी पूर्ण माना जाता है जब आप पूजा के वक्त उसकी कथा का भी पाठ करते हैं।

गुरु प्रदोष व्रत कथा

एक बार इंद्र और वृत्रासुर के बीच भयंकर युद्ध हुआ। इस समय, देवताओं ने दैत्य सेना को पराजित कर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।



अपनी सेना को नष्ट होता देख राक्षस वृत्रासुर अत्यंत क्रोधित हो गया और युद्ध के लिए तैयार हो गया। शैतान के भ्रम के कारण प्रेत शैतान ने एक भयानक राक्षस का रूप धारण कर लिया। जब इंद्र देवताओं ने उन्हें देखा, तो उन्होंने इंद्र से परामर्श किया और गुरु बृहस्पतिजी का आह्वान किया। गुरु तुरंत आये और बोले, “हे देवेन्द्र!” अब वृत्रासुर की बात ध्यान से सुनो। वृत्रासुर पहला महान तपस्वी था जिसने खुद को अपने काम के लिए समर्पित कर दिया और भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए गन्धमादन पर्वत पर कठोर तपस्या की। एक समय की बात है चित्ररथ नाम का एक राजा था। तुम्हारे निकट का सुन्दर वन ही उसका राज्य था। अब पवित्र हृदय वाले महात्मा इस वन का आनंद लेते हैं। यह भगवान के दर्शन की अनुपम भूमि है।

एक दिन चित्ररथ स्वेच्छा से कैलाश पर्वत पर गये। भगवान और उनके बायीं ओर बैठी जगदम्बा की आकृति देखकर चित्ररथ हँसे, हाथ जोड़कर शिव शंकर से बोले, “हे प्रभु।” हम माया से मोहित हैं और सांसारिक मामलों में कैद होने के कारण स्त्रियों के वश में रहते हैं। परन्तु देवताओं के लोक में कहीं भी किसी को स्त्री के साथ बैठक करते हुए नहीं देखा गया। जब सर्वव्यापी भगवान शिव ने चित्ररथ के ये वचन सुने तो वे हँसे और बोले, “हे राजन।” मैंने कालकूट नामक घातक विष पी लिया। हालाँकि, आप सामान्य लोगों की तरह मुझ पर हँसते हैं। तब पार्वती ने क्रोधित होकर चित्ररथ की ओर देखा और कहा, “हे दुष्ट, तूने सर्वव्यापी महेश्वर के साथ-साथ मेरा भी उपहास किया है, तुझे अपने किये का फल भोगना पड़ेगा।”



उपस्थित सदस्य पवित्र प्रकृति के पवित्र ग्रंथों के महान साधक हैं, सनक सनंदन सनतकुमार हैं और सभी अज्ञानता के नष्ट होने के बाद शिव की पूजा करने के लिए तैयार हैं। मूर्ख राजा, तुम बहुत बुद्धिमान हो, मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम कभी भी ऐसे संतों का मजाक नहीं उड़ाओगे। अब तुम राक्षस बन जाओ और विमान से गिर जाओ। मैं तुम्हें शाप देता हूँ कि तुम अब पृथ्वी पर चले जाओ। जब जगदम्बा भवानी ने चित्ररथ को यह श्राप दिया, तो वह तुरंत विमान से गिर गया, एक राक्षस का रूप धारण कर लिया और महासुर के नाम से जाना जाने लगा। तवष्टा नामक ऋषि ने बड़ी तपस्या से उसे उत्पन्न किया था और आज भी वही वृत्रासुर शिवभक्ति में ब्रह्मचारी रहता है। इसलिए आप उसे हरा नहीं सकते। इसलिए मेरी परामर्श है कि तुम गुरु प्रदोष व्रत करो जिससे महाबलशाली दैत्य पर विजय प्राप्त कर सको। गुरुदेव के वचनों को सुनकर सब देवता प्रसन्न हुए और गुरुवार को त्रयोदशी तिथि को (प्रदोष व्रत विधि विधान से किया। जिससे वृत्रासुर पराजित हुआ और देवता एवं मनुष्य सुखी हुए। बोले भगवान शिव शंकर की जय।

ये है मान्यता

पौराणिक मान्यता के अनुसार, जब समुद्र मंथन से हलाहल विष निकला तो ब्रह्मांड को बचाने के लिए महादेव ने इस भयानक विष को पी लिया था। यह विष इतना तीव्र था कि इसे पीने के बाद महादेव का कंठ नीला पड़ गया और विष के प्रभाव से उनके शरीर में असहनीय जलन होने लगी। तब देवताओं ने जल, बेलपत्र आदि से महादेव की जलन को कम किया।



प्रदोष व्रत पूजा विधि

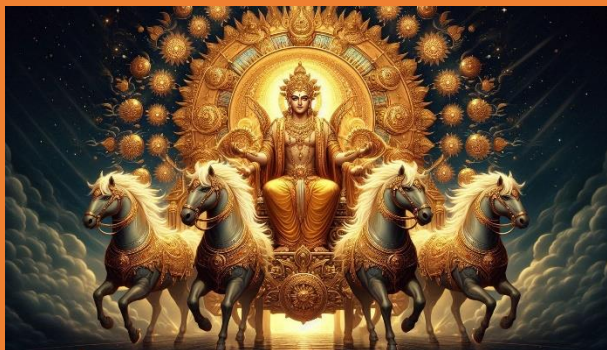
प्रदोष व्रत के दिन सुबह उठकर स्नान करें और पीले वस्त्र धारण करें। इस दिन काले कपड़े पहनने से बचना चाहिए। पूरे घर में गंगाजल छिड़कें। और भगवान शिव का पंचामृत से अभिषेक करें। फिर पीले चंदन से टीका करें। भगवान शिव को भांग धतूरा और बेलपक्ष चढ़ाएं और फूलों से उनकी पूजा करें।

गुरु प्रदोष व्रत पर भूलकर न करें ये गलतियां

- 1. मंदिर की सफाई-** गुरु प्रदोष व्रत के दिन पूजा से पहले साफ-सफाई करनी चाहिए। साथ ही इस दिन शिवलिंग पर तुलसी के पत्ते, केतकी के फूल, कुंमक और नारियल का जल भी नहीं चढ़ाना चाहिए।
- 2. झगड़ा न करें-** इस दिन अपने घर में झगड़ा या बहस न करें, भले ही आप गलत हों। व्रत रखने वाले लोगों को दूसरों के प्रति बुरा विवेक नहीं रखना चाहिए। व्रत करने वाले व्यक्ति को चोरी, झूठ और हिंसा से बचना चाहिए।
- 3. तामसिक भोजन न करें-** प्रदोष व्रत के दिन तामसिक भोजन न करें। ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन करने से बचें जिनमें लहसुन या प्याज हो। ऐसे दिनों में आपको मांस या शराब का सेवन नहीं करना चाहिए।
- 4. ज्यादा देर तक न सोएं-** प्रदोष व्रत के दिन सुबह देर तक नहीं सोना चाहिए और ना ही दिन में सोएं। बल्कि पूरे दिन भगवान शिव का ध्यान करना चाहिए।
- 5. शिवलिंग को न छुएं-** प्रदोष व्रत वाले दिन महिलाओं को शिवलिंग को नहीं छूना चाहिए। ऐसा करने से माता पार्वती नाराज हो जाती हैं।
- 6. काले कपड़े न पहनें-** प्रदोष व्रत के दिन काले कपड़े पहनने की गलती न करें। काले रंग को अशुभ रंग माना जाता है। इस दिन लाल या पीला वस्त्र अवश्य पहनें।



Related Articles



[Shri Surya Dev Katha](#)



[Bhagwan Vishnu Vrat
Katha](#)



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com



Follow us on:

